चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	19-10-24	2	1-4

दैनिक भास्कर

भास्कर खास • एचएयू में भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना पर की बैठक

पैदावार बढ़ाने को मसालों की 7 किस्मों की पहचान

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में 35वें अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक में मसाला फसलों की सात नई किस्मों की पहचान की गई। बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों के 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

आईसीएआर के सहायक महानिदेशक बागवानी विभाग डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए मसाले वाली फसलों की जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी। इसी कड़ी में राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में 3 दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली निम्नलिखित सात नई किस्मों की पहचान की गई। एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज ने कहा कि बैठक में मसाला वाली फसलों से संबंधित 11 नई पुस्तकों व तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया।

इन नई किस्मों की सिफारिश

- धनिया फसल की करण धनिया-1
- जीरा की जोधपुर जीरा-1
- काजरी जीरा-1
- सौंफ की गुजरात-13
- अदरक की एसएएस-केवू
- हल्दी की आईआईएसआर-सूर्या
- मेथी की आरएमटी-259

अदरक, हल्दी, छोटी और बड़ी इलाइची की पैदावार बढ़ाने पर जोर

नई किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी। नई किस्मों की पहचान के अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की सिफारिश की है। इनमें भंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है। दूसरी सिफारिश में इलाइची की फसल को राइजोम सड़न बीमारी से बचाने के लिए टैबुकोनाजोल दवाई का छिड़काव फायदेमंद है। तीसरी सिफारिश में बड़ी इलाइची की फसल में मलचिंग करके मृदा की नमी को संरक्षित करना तथा खरपतवार नियंत्रण करके पैदावार बढ़ाना भी शामिल रहा। इन नई कृषि पद्धतियों की सिफारिश से अदरक, हल्दी, छोटी इलाइची व बड़ी इलाइची की फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19-10-24	3	3-6

मसाला फसलों की 7 नई किस्मों की हुई पहचान

इन नई किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मसाले वाली फसलों की बढ़ेगी पैदावार

मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी सिफारिश

हिसार, 18 अक्तूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया।

बैठक में आई.सी.ए.आर. के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों सहित भविष्य में उभरती समस्याओं से निपटने के लिए मसाले वाली फसलों की जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी। इसी कड़ी में इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में तीन दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली 7 नई किस्मों की पहचान की गई। इनमें धनिया फसल की करण धनिया-1, जीरा की जोधपुर जीरा-1, काजरी जीरा-1, सौंफ की गुजरात-13, अदरक की एस.ए.एस.-केवू, हल्दी की आई.आई.एस.आर.-सूर्या, मेथी की आर.एम.टी.-259 शामिल है।

इन नई किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी

बैठक को संबोधित करते डॉ. सुधाकर पांडे।

तथा किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। इन नई किस्मों की पहचान के अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी सिफारिश की गई, जिनमें भंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है।

दूसरी सिफारिश में इलाइची की फसल को राइजोम सड़न बीमारी से बचाने के लिए टेबुकोनाजोल दवाई का छिड़काव फायदेमंद है। तीसरी सिफारिश में बड़ी इलाइची की फसल में मलचिंग करके मृदा की नमी को संरक्षित करना तथा खरपतवार नियंत्रण करके पैदावार बढ़ाना भी शामिल रहा। इन नई कृषि पद्धतियों की सिफारिश से अदरक, हल्दी, छोटी इलाइची व बड़ी इलाइची की फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी।

बैठक में मसालों को लेकर वैज्ञानिकों ने रखे विचार

बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एस.के. सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डी. प्रसाथ के अलावा डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. के.वी. पार्थासारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे व देशभर से आए मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर विशेष केंद्रों पर काम कर रहे हैं, ताकि नई सस्य क्रियाएं विकसित करने, प्रौद्योगिकियों में सुधार, प्रमुख मसालों में कीटनाशक अवशेषों, लेबल दावों, मशीनीकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तीव्रता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशिष्ट गुणवत्ता लक्षणों के साथ अच्छे

कृषि पद्धतियों और किस्मों को एकीकृत किया जा सके। उन्होंने बताया कि तीन दिनों चली इस बैठक से मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को नई दिशा मिलेगी। साथ ही आगामी समय में लगाए जाने वाले नए प्रयोगों, प्रोजेक्ट बनाने व किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	19-10-24	11	2-6

हकृवि में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक संपन्न

मसाला फसलों में 7 नई किस्मों की हुई पहचान, बढ़ेगी पैदावार

देशभर से 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से 150 से अधिक वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया। तीन दिन चली इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डी. प्रसाथ के अलावा डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. केवी पार्थासारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखें।

हिसार। बैठक को संबोधित करते डॉ. सुधाकर पांडे फोटो : हरिभूमि

नींबू व अमरूद का बाग लगाने पर मिलेगा अनुदान

हिसार। उपायुक्त प्रदीप दहिया ने बताया कि प्रदेश में परंपरागत खेती के जोखिमों को कम करने व फसल विविधिकरण के तहत खेती कर रहे किसानों को आर्थिक मजबूती प्रदान करने के लिए बागवानी विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार के बाग लगाने के लिए किसानो को अनुदान राशि दी जा रही है। दहिया ने बताया कि अनुदान योजना के तहत जिले में नींबू, वर्गीय फल व अमरूद का बाग लगाने वाले किसानों के लिए प्रदेश सरकार द्वारा बागवानी के क्षेत्र को बढ़ाने के लिये विशेष अनुदान योजना लागू की गई है। बागों के लिए (अमरूद, नींबू वर्गीय स्ट्राबेरी आदि) 43 हजार रुपये प्रति एकड़ अनुदान राशि का प्रोत्साहन है। एम.आई.डी.एच. स्कीम की गाईड लाईन के तहत पहले साल 23 हजार रुपये व दूसरे व तीसरे साल 10-10 हजार रुपये रख रखाव के लिये अनुदान राशि के रूप में दिए जाएंगे।

मसाला फसलों पर काम करने के लिए किया प्रेरित

देशभर से आए मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रेरित किया। बैठक में आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों सहित भविष्य में उभरती समस्याओं से निपटने के लिए मसाले वाली फसलों की जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी।

इन नई किस्मों की हुई पहचान

इसी कड़ी में इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में तीन दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली सात नई किस्मों की पहचान की गई। इनमें धनिया फसल की करण धनिया-1, जीरा की जोधपुर जीरा-1, काजरी जीरा-1, सौंफ की गुजरात-13, अदरक की एसएएस-केवू, हल्दी की आईआईएसआर-सूर्या तथा मेथी की आरएमटी-259 की पहचान हुई है। इन नई किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी तथा किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी।

पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की सिफारिश

इन नई किस्मों की पहचान के अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी सिफारिश की गई, जिनमें भंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है। दूसरी सिफारिश में इलाइची की फसल को राइजोम सडन बीमारी से बचाने के लिए टेबुकोनाजोल दवाई का छिड़काव फायदेमंद है। तीसरी सिफारिश में बड़ी इलाइची की फसल में मलचिंग करके मृदा की नमी को संरक्षित करना तथा खरपतवार नियंत्रण करके पैदावार बढ़ाना भी शामिल रहा। इन नई कृषि पद्यतियों की सिफारिश से अदरक, हल्दी, छोटी इलाइची व बड़ी इलाइची की फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी।

वैज्ञानिकों को नई दिशा मिलेगी : प्रो. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर विशेष केंद्रों पर काम कर रहे हैं, ताकि नई सस्य क्रियाएं विकसित करने, प्रौद्योगिकियों में सुधार, प्रमुख मसालों में कीटनाशक अवशेषों, लेबल दावों, मशीनीकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तीव्रता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशिष्ट गुणवत्ता लक्षणों के साथ अच्छे कृषि पद्धतियों और किस्मों को एकीकृत किया जा सके। उन्होंने बताया कि तीन दिनों चली इस बैठक से मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को नई दिशा मिलेगी। इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में मसाला वाली फसलों से संबंधित 11 नई पुस्तकों व तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया। सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान ने कार्यक्रम में आए हुए सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का धन्यवाद किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	19-10-24	5	3-4

मसाला फसलों की सात नयी किस्मों की हुई पहचान, बढ़ेगी पैदावार

हिसार, 18 अक्तूबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शुक्रवार को 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। बैठक में मसाला फसलों की सात नयी किस्मों की पहचान की जानकारी दी गई, जो पैदावार बढ़ाएगी। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया।

बैठक में आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी। बैठक में तीन दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली सात नयी किस्मों की पहचान की गई। इनमें धनिया फसल की करण धनिया-1, जीरा की जोधपुर जीरा-1, काजरी जीरा-1, सौंफ की गुजरात-13, अदरक की एसएएस-केवू, हल्दी की आईआईएसआर-सूर्या, मेथी की आरएमटी-259 शामिल हैं।

कृषि तकनीकों की भी सिफारिश

इन नयी किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी तथा किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नयी कृषि तकनीकों की भी सिफारिश की गई, जिनमें भंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है। दूसरी सिफारिश में इलाइची की फसल को राइजोम सड़न बीमारी से बचाने के लिए टेबुकोनाजोल दवाई का छिड़काव फायदेमंद है। तीसरी सिफारिश में बड़ी इलाइची की फसल में मलचिंग करके मृदा की नमी को संरक्षित करना तथा खरपतवार नियंत्रण करके पैदावार बढ़ाना भी शामिल रहा। इन नयी कृषि पद्धतियों की सिफारिश से अदरक, हल्दी, छोटी इलाइची व बड़ी इलाइची की फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी। तीन दिन चली बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डी. प्रसाद के अलावा डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. केवी पार्थासारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	19-10-24	5	5-8

हकृवि में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक सम्पन्न

हिसार, 18 अक्तूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया। तीन दिन चली इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डी. प्रसाथ के अलावा डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. केवी पार्थासारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे व देशभर से आए मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रेरित किया। बैठक में आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों सहित भविष्य में उभरती समस्याओं से निपटने

बैठक को सम्बोधित करते हुए डा. सुधाकर पांडे।

के लिए मसाले वाली फसलों की जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी। इसी कड़ी में इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में तीन दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली निम्नलिखित सात नई किस्मों की पहचान की गई। धनिया फसल की करण धनिया-1,जीरा की जोधपुर जीरा-1,काजरी जीरा-1, सौंफ की गुजरात-13,अदरक की एसएएस-केवू, हल्दी की आईआईएसआर-सूर्या व मेथी की आरएमटी-259 इन नई किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी तथा किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। इन नई किस्मों की पहचान के अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी सिफारिश की गई, जिनमें भंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर विशेष केंद्रों पर काम कर रहे हैं, ताकि नई सस्य क्रियाएं विकसित करने, प्रौद्योगिकियों में सुधार, प्रमुख मसालों में कीटनाशक अवशेषों, लेबल दावों, मशीनीकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तीव्रता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशिष्ट गुणवत्ता लक्षणों के साथ अच्छे कृषि पद्धतियों और किस्मों को एकीकृत किया जा सके।

तीन दिनों चली इस बैठक से मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को नई दिशा मिलेगी। साथ ही आगामी समय में लगाए जाने वाले नए प्रयोगों, प्रोजेक्ट बनाने व किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में मसाला वाली फसलों से संबंधित 11 नई पुस्तकों व तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया। सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान ने कार्यक्रम में आए हुए सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का धन्यवाद किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	18.10.2024	---	--

एचएयू में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक संपन्न, सात नई किस्मों की हुई पहचान

विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया। तीन दिन चली इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डी. प्रसाथ के अलावा डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. केवी पार्थासारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे व देशभर से आए मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रेरित किया।

बैठक को संबोधित करते डॉ. सुधाकर पांडे

इन किस्मों की हुई पहचान

धनिया फसल की करण धनिया-1,
जीरा की जोधपुर जीरा-1,
काजरी जीरा-1,
सौंफ की गुजरात-13,
अदरक की एसएस-केवु,
हल्दी की आईआईएसआर-सूर्या
मेथी की आरएमटी-259

मसाला फसलों की सात नई किस्मों की हुई पहचान, बढ़ेगी पैदावार : डॉ. सुधाकर पांडे

बैठक में आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों सहित भविष्य में उभरती समस्याओं से निपटने के लिए मसाले वाली फसलों की जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी। इसी कड़ी में इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में तीन दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली सात नई किस्मों की पहचान की गई।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर विशेष केंद्रों पर काम कर रहे हैं, ताकि नई सस्य क्रियाएं विकसित करने, प्रौद्योगिकियों में सुधार, प्रमुख मसालों में कीटनाशक अवशेषों, लेबल दावों, मशीनीकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तीव्रता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशिष्ट गुणवत्ता लक्षणों के साथ अच्छे कृषि पद्धतियों और किस्मों को एकीकृत किया जा सके। इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में मसाला वाली फसलों से संबंधित 11 नई पुस्तकों व तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	18.10.2024	---	--

हकृवि में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक संपन्न

मसाला फसलों की सात नई किस्मों की हुई पहचान, बढ़ेगी पैदावार : डॉ. पांडे

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में मसालों के क्षेत्र में प्रगति और नवाचार को लेकर वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श किया। तीन दिन चली इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एमके सिंह, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड के निदेशक डॉ. आर.दिनेश, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र अजमेर के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मसाला फसलों के प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर डॉ. डी. प्रसाथ के अलावा डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. केवी पाथीसारथी ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे व देशभर से आए मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को प्रेरित किया।

मसाला फसलों की सात नई किस्मों की हुई पहचान, बढ़ेगी पैदावार: डॉ. सुधाकर पांडे

बैठक में आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (बागवानी विभाग) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों सहित भविष्य में उभरती समस्याओं से निपटने के लिए मसाले वाली फसलों की जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, रोगरोधी एवं बायोटिक एवं अबायोटिक तनाव के प्रति सहनशील किस्में तैयार करनी होंगी। इसी कड़ी में इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में तीन दिन चले मंथन से मसाले वाली फसलों की उच्च गुणवत्ता एवं अधिक पैदावार देने वाली निम्नलिखित सात नई किस्मों की पहचान की गई:

1. धनिया फसल की करण धनिया-1,
2. जीरा की जोधपुर जीरा-1,
3. काजरी जीरा-1,
4. सौंफ की गुजरात-13,
5. अदरक की एसएएम-केयू,
6. हल्दी की आईआईएसआर-सूर्या
7. मेथी की आरएमटी-259

इन नई किस्मों की पहचान से धनिया, जीरा, सौंफ, अदरक, हल्दी व मेथी जैसी मुख्य मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ेगी तथा किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। इन नई किस्मों की पहचान के अलावा मसाले वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई कृषि तकनीकों की भी सिफारिश की गई, जिनमें भंडारण से पहले अदरक एवं हल्दी के बीज राइजोम की ट्राइकोडरमा ट्राइकोप्राइम का पांच प्रतिशत की दर से उपचार करने से अंकुरण दर में सुधार करके उपज बढ़ाई जा सकती है। दूसरी सिफारिश में इलाइची की फसल को राइजोम सड़न बीमारी से बचाने के लिए टेमुकोनाजोल दवाई का छिड़काव फायदेमंद है। तीसरी सिफारिश में बड़ी इलाइची की फसल में मल्चिंग करके मृदा की नमी को संरक्षित करना तथा खरपतवार नियंत्रण करके पैदावार बढ़ाना भी शामिल रहा। इन नई कृषि पद्धतियों की सिफारिश से अदरक, हल्दी, छोटी इलाइची व बड़ी इलाइची की फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद मिलेगी।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर विशेष केंद्रों पर काम कर रहे है, ताकि नई सस्य क्रियाएं विकसित करने, प्रौद्योगिकियों में सुधार, प्रमुख मसालों में कीटनाशक अवशेषों, लेबल दावों, मशीनीकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तीव्रता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशिष्ट गुणवत्ता लक्षणों के साथ अच्छे कृषि पद्धतियों और किस्मों को एकीकृत किया जा सके। उन्होंने बताया कि तीन दिनों चली इस बैठक से मसाला फसलों पर काम करने वाले वैज्ञानिकों को नई दिशा मिलेगी। साथ ही आगामी समय में लगाए जाने वाले नए प्रयोगों, प्रोजेक्ट बनाने व किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। इस राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक समूह बैठक में मसाला वाली फसलों से संबंधित 11 नई पुस्तकों व तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया। सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान ने कार्यक्रम में आए हुए सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का धन्यवाद किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	19.10.2024	---	--

हकृवि कुलपति ने कर्मचारियों को दिवाली पर दिया पदोन्नतियों का तोहफा

23 कर्मचारी क्लर्क से बने सहायक

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 18 अक्टूबर : एग्रीकल्चर युनिवर्सिटी नॉन टीचिंग स्टाफ एसोसिएशन की एक आवश्यक बैठक चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय में आयोजित की गई। बैठेक में हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. कंबोज द्वारा की गई पदोन्नतियों पर खुशी व्यक्त की गई।

एसोसिएशन पदाधिकारियों ने बताया कि इन पदोन्नतियों से कर्मचारियों में खुशी की लहर है। इन पदोन्नतियों में कुल सचिव डॉ. पवन कुमार की भी अहम भूमिका रही है। कुल सचिव डॉ. पवन कुमार को कड़ी मेहनत से एल.एस. एग्जाम पास कर्मचारियों को समय पर पदोन्नति दी गई। पदोन्नति पाने वाले कर्मचारियों में राकेश, शकुंतला, आनंद, पूजा, विक्रम पाल, सुभाष, मंजू बाला, कुलदीप, सुरेंद्र सिंह, मंदीप, अंकुश, अनिल, विकास, बजरंग, शिक्षा देवी, मनोषा, अनिल, हनुमान सिंह, पिंकु कुमार, उदेश कुमार, अजय कुमार, सुमित वागड़ी, मनीष पूनिया शामिल हैं। इसी प्रकार एक अन्य कर्मचारी साहिल नरुला को जूनियर स्कूल स्टेनोग्राफर से सीनियर स्केल स्टेनोग्राफर के पद पर पदोन्नत किया गया है। अनुसंधान निदेशक कार्यालय से भी तीन कर्मचारियों को कृषि निरीक्षक से तकनीकी सहायक के पद पदोन्नति मिली है जिनमें मनोहर लाल, कृष्ण कुमार, देवी लाल शामिल हैं।

एसोसिशन के प्रधान सुनील कुमार ने कहा कि प्रो. बी.आर. कंबोज जब से हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति बने हैं तब से विश्वविद्यालय में बिना भेदभाव के कर्मचारियों को पदोन्नत किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रो. बी.आर. कांबोज कुलपति व डॉ. पवन कुमार कुलसचिव का आभार व्यक्त किया गया। बैठक में प्रधान सुनील कुमार, महासचिव राजकुमार गंगवानी व उपप्रधान जोगिंद्र सिंह, उपप्रधान महेंद्र कुमार खुराना, सह सचिव आशीष शर्मा, प्रेस सचिव सुरेंद्र राणा, कार्यालय सचिव वीरपाल, कैशियर रामप्रताप जांगड़ा, ऑडिटर, सुनील पंडित, कार्यकारिणी सदस्य औमप्रकाश, नवीन सभ्रवाल आदि मौजूद थे।